

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के लिए विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ देश में एक बार फिर लोकतांत्रिक प्रक्रिया का बड़ा पर्व शुरू हो गया है. चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं होते, बल्कि यह जनता के विश्वास, भागीदारी और लोकतंत्र की मजबूती का सबसे बड़ा प्रतीक भी होते हैं. लेकिन इन शक्ति चुनावों में सबसे अधिक संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण चुनाव पश्चिम बंगाल के माने जा रहे हैं. इसकी वजह वहां की चुनावी हिंसा का लंबा और चिंताजनक इतिहास है.

पश्चिम बंगाल में चुनावों के दौरान हिंसा लगभग एक स्थायी समस्या बन चुकी है. चुनाव प्रचार के समय राजनीतिक दलों के समर्थकों के बीच झड़पें होना, मतदान के दिन बूथों पर कब्जा करने या मतदाताओं को डराने-धमकाने की घटनाएं सामने आना और चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद भी प्रतिशोध की हिंसा होना वहां की राजनीतिक संस्कृति का दुर्भाग्यपूर्ण हिस्सा बन गया है. कई बार यह हिंसा इतनी गंभीर हो जाती है कि आम मतदाता थका और असुरक्षा की भावना से मतदान केंद्र तक जाने से भी हिचकने लगता है. लोकतंत्र के लिए इससे बड़ी विडंबना और

स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव हो

क्या हो सकती है कि नागरिक को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए भी भय से मुक्त वातावरण न मिले.

दिवस्य तथ्य यह है कि देश के कई ऐसे राज्य, जिनमें कभी सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माना जाता था, वहां आज अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न हो रहे हैं. जम्मू-कश्मीर जैसे लंबे समय तक आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्र में भी अब लोकतांत्रिक प्रक्रिया काफ़ी हद तक शांतिपूर्ण ढंग से पूरी हो रही है. बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे बड़े और जटिल सामाजिक समीकरण वाले राज्यों में भी चुनाव आयोग की सख्ती और प्रशासनिक सतर्कता के कारण चुनावी हिंसा पर काफ़ी हद तक नियंत्रण पाया गया है. यहां तक कि पूर्वोक्त के कई राज्यों में भी चुनाव पहले की तुलना में कहीं अधिक शांतिपूर्ण हो गए हैं. इसके विपरीत पश्चिम बंगाल की स्थिति अलग दिखाई देती है. यहां लोकसभा चुनाव हो, विधानसभा चुनाव हो, पंचायत चुनाव हो या स्थानीय निकायों के चुनाव,

लगभग हर चुनाव के साथ हिंसा की खबरें जुड़ी रहती हैं. इस वजह से यह धारणा बन गई है कि पश्चिम बंगाल देश का शायद एकमात्र ऐसा राज्य है जहां बिना हिंसा के चुनाव की कल्पना भी कठिन लगती है. यह स्थिति न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बल्कि राज्य की सामाजिक समरसता के लिए भी चिंताजनक है. ऐसे में पश्चिम बंगाल में शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव कराना चुनाव आयोग के लिए बड़ी परीक्षा से कम नहीं है. आयोग को सुरक्षा बलों की पर्याप्त तैनाती, संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान, चरणबद्ध मतदान और कड़ी प्रशासनिक निगरानी जैसे उपायों को पूरी गंभीरता से लागू करना होगा. केंद्रीय सुरक्षा बलों की मौजूदगी और कड़ी चुनावी निगरानी से मतदाताओं में विश्वास पैदा करना भी उतना ही जरूरी है.

हालांकि यह भी उतना ही सच है कि केवल प्रशासनिक उपायों से इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता. राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी भी कम नहीं है. लोकतंत्र में राजनीतिक

प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक और आवश्यक है, लेकिन यदि वह हिंसा और प्रतिशोध की संस्कृति में बदल जाए तो यह लोकतंत्र के मूल्यों को कमजोर कर देती है. इसलिए सभी दलों को यह समझना होगा कि चुनावी जीत-हार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रतिष्ठा और जनता का विश्वास है. पश्चिम बंगाल की पहचान लंबे समय तक बौद्धिक विमर्श, राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक जागरूकता के केंद्र के रूप में रही है. ऐसे राज्य में यदि चुनाव हिंसा का पर्याय बन जाए तो यह केवल राजनीतिक विफलता नहीं बल्कि सामाजिक चिंता का विषय भी है. इसलिए जरूरी है कि इस बार के चुनाव एक नई परंपरा की शुरुआत करें, जहां मतदाता निर्भय होकर मतदान कर सकें और लोकतंत्र की असली ताकत मतघटी के माध्यम से सामने आए.

बहरहाल, इस बार सभी पांच राज्यों में शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव संपन्न होते हैं, तो यह न केवल चुनाव आयोगों की बड़ी सफलता होगी बल्कि भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता और मजबूती का भी एक महत्वपूर्ण प्रमाण बनेगा. यही लोकतांत्रिक व्यवस्था की असली जीत होगी.

संवेदनशील न्यायिक तंत्र की आवश्यकता



शशील कुमार
शोध छात्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस फैसले को रद्द कर दिया, जिसमें यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम, 2012 (पोक्सो) के एक मामले में समन के महत्व को कम कर दिया गया था. जज सूर्यकांत, जामनालाल बागची और एनवी अंजारी की पीठ ने ट्रायल कोर्ट के मूल समन आदेश को बहाल किया और कहा कि प्रथमदृष्टया आरोपों से दुष्कर्म करने का प्रयास प्रतीत होता है, न कि केवल संवेदनशीलता के यौवन मानकों को स्थापित करते हुए यौन अपराधों के मुकदमों में अधिक संवेदनशील और एकसमान न्याय निर्णय के लिए दिशा निर्देश तैयार करने की प्रक्रिया शुरू की.

जब कोई समर्थ, शिक्षित महिला केवल एक अनचाहे स्पर्श से वर्षों तक अपने भीतर असुरक्षा दो सकती है, तो यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि वे बच्चियां, जो यौन शोषण जैसी गंभीर त्रासदी का सामना करती हैं, उनमें आत्मसम्मान, विश्वास और सुरक्षा को भावना किस गहराई तक आहत होती होगी. अतः यह केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, न्यायिक दायित्व का अनिवार्य विस्तार है कि संपूर्ण न्यायिक तंत्र यौन पीड़िताओं के लिए ऐसा परिवेश निर्मित करे, जो संवेदनशील, करुणामय एवं संरक्षणात्मक हो.

उतारने के इरादे से हमला कर दिया था. इसके साथ ही पोक्सो के संबंधित प्रविधानों को भी धारा 18 से घटाकर धारा 10 कर दिया गया था, जिसमें आजीवन कारावास की आधी सजा का नियम है, जबकि धारा 18 में 5-7 वर्ष के कारावास का प्रविधान है.

सुप्रीम कोर्ट ने यह माना कि देश की विभिन्न अदालतों में संवेदनशीलता को लेकर बरती जाने वाली सावधानी में कहीं न कहीं चूक हो जाती है, इसीलिए उसने यह कार्य प्रशिक्षण प्रणाली को सौंप दिया तथा भोपाल स्थित राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी से एक विशेषज्ञ समिति गठित करके का आग्रह किया. समिति को भाषाई विविधता और आम लोगों के लिए सुगम्यता का ध्यान रखते हुए एक व्यापक रिपोर्ट और दिशा निर्देशों का मसौदा तैयार करने को कहा गया है. न्यायालय का इस पर विशेष जोर था कि समिति प्रतिवेदन तैयार करते समय राष्ट्र को भाषाई विविधता को ध्यान में रखे. उसने यह भी इंगित किया कि विभिन्न क्षेत्रों की बोलियों में प्रचलित अनेक ऐसे शब्द एवं

अभिव्यक्तियां हैं, जो सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होती हैं, पर वे दंड विधि के तहत आपत्तजनक या अपराध की श्रेणी में आ सकती हैं.

अतः समिति का यह दायित्व होगा कि वह विभिन्न भाषाओं के ऐसे शब्दों की पहचान कर उनका संकलन करे, ताकि वे न्यायिक प्रक्रिया में अन्दरूने न रह जायें. सुप्रीम कोर्ट ने विशेषज्ञ समिति से इस विषय पर एक समग्र रिपोर्ट तैयार करने को कहा कि यौन अपराध के मामलों में न्यायिक प्रक्रिया में संवेदनशीलता कैसे विकसित की जाए.

इससे पूर्व अपराध भट बनाम मध्य प्रदेश राज्य, 18 मार्च, 2021 मामले में शीर्ष न्यायालय ने राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी से कहा था कि वह युवा न्यायाधीशों के प्रशिक्षण और न्यायाधीशों की सतत शिक्षा में लैंगिक संवेदनशीलता से संबंधित आवश्यक सामग्री को शीघ्रता से तैयार करे, जिसमें न्यायिक तर्कों में अंतर्निहित रूढ़ियों और अचेतन पूर्वाग्रहों के प्रति पर्याप्त जागरूकता कार्यक्रम शामिल हों.

सुप्रीम कोर्ट लगातार देश की विभिन्न अदालतों द्वारा यौन अपराधों के मामलों में प्रदर्शित संवेदनात्मक कमी और रूढ़िगति दृष्टिकोण पर आपत्ति व्यक्त करता रहा है. हालिया निर्णय में भी सुप्रीम कोर्ट ने इसी चिंता को दोहराते हुए कहा, हमारे सभी निर्णयों में करुणा, मानवता एवं समझ की भावना झलकनी चाहिए. यही तत्व एक निष्पक्ष एवं प्रभावी न्यायप्रणाली के निर्माण के लिए जरूरी हैं.

यह टिप्पणी सिर्फ एक न्यायिक अवलोकन भर नहीं, संवेदनशील न्यायशास्त्र की दिशा में किया गया एक सशक्त और ऐतिहासिक हस्ताक्षर है. यह यौन शोषण से गुजरी पीड़िता के लिए आश्रित और सहायभूति का संदेश देती है. एक ऐसा ही संदेश हाल में उड़ीसा उच्च न्यायालय ने तब दिया, जब उसने कहा कि यौन अपराधों में सेक्सअल इंस्टेंट यानी यौन मंशा सबसे महत्वपूर्ण है. उसने यह भी कहा कि किसी लड़की के शरीर के ऊपरी हिस्से को छूना, दबाना और खींचना यौन उत्पीड़न है.

निःसंदेह यौन अपराध की यातना को उसकी संपूर्ण गहराई में वही समझ सकता है, जिसने उस आघात को अपने जीवन में भोगा है. न्यायपालिका की यह मानवीय दृष्टि न केवल विधिक प्रक्रिया को अधिक करुणामय और उत्तरदायी बनाती है, बल्कि पीड़ितों के मन में न्याय व्यवस्था के प्रति विश्वास और गरिमा की भावना को भी पुनर्जीवित करती है.

दिया गया था. जज सूर्यकांत, जामनालाल बागची और एनवी अंजारी की पीठ ने ट्रायल कोर्ट के मूल समन आदेश को बहाल किया और कहा कि प्रथमदृष्टया आरोपों से दुष्कर्म करने का प्रयास प्रतीत होता है, न कि केवल संवेदनशीलता के यौवन मानकों को स्थापित करते हुए यौन अपराधों के मुकदमों में अधिक संवेदनशील और एकसमान न्याय निर्णय के लिए दिशा निर्देश तैयार करने की प्रक्रिया शुरू की.

जब कोई समर्थ, शिक्षित महिला केवल एक अनचाहे स्पर्श से वर्षों तक अपने भीतर असुरक्षा दो सकती है, तो यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि वे बच्चियां, जो यौन शोषण जैसी गंभीर त्रासदी का सामना करती हैं, उनमें आत्मसम्मान, विश्वास और सुरक्षा को भावना किस गहराई तक आहत होती होगी. अतः यह केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, न्यायिक दायित्व का अनिवार्य विस्तार है कि संपूर्ण न्यायिक तंत्र यौन पीड़िताओं के लिए ऐसा परिवेश निर्मित करे, जो संवेदनशील, करुणामय एवं संरक्षणात्मक हो.

उतारने के इरादे से हमला कर दिया था. इसके साथ ही पोक्सो के संबंधित प्रविधानों को भी धारा 18 से घटाकर धारा 10 कर दिया गया था, जिसमें आजीवन कारावास की आधी सजा का नियम है, जबकि धारा 18 में 5-7 वर्ष के कारावास का प्रविधान है.

सुप्रीम कोर्ट ने यह माना कि देश की विभिन्न अदालतों में संवेदनशीलता को लेकर बरती जाने वाली सावधानी में कहीं न कहीं चूक हो जाती है, इसीलिए उसने यह कार्य प्रशिक्षण प्रणाली को सौंप दिया तथा भोपाल स्थित राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी से एक विशेषज्ञ समिति गठित करके का आग्रह किया. समिति को भाषाई विविधता और आम लोगों के लिए सुगम्यता का ध्यान रखते हुए एक व्यापक रिपोर्ट और दिशा निर्देशों का मसौदा तैयार करने को कहा गया है. न्यायालय का इस पर विशेष जोर था कि समिति प्रतिवेदन तैयार करते समय राष्ट्र को भाषाई विविधता को ध्यान में रखे. उसने यह भी इंगित किया कि विभिन्न क्षेत्रों की बोलियों में प्रचलित अनेक ऐसे शब्द एवं

अभिव्यक्तियां हैं, जो सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होती हैं, पर वे दंड विधि के तहत आपत्तजनक या अपराध की श्रेणी में आ सकती हैं.

अतः समिति का यह दायित्व होगा कि वह विभिन्न भाषाओं के ऐसे शब्दों की पहचान कर उनका संकलन करे, ताकि वे न्यायिक प्रक्रिया में अन्दरूने न रह जायें. सुप्रीम कोर्ट ने विशेषज्ञ समिति से इस विषय पर एक समग्र रिपोर्ट तैयार करने को कहा कि यौन अपराध के मामलों में न्यायिक प्रक्रिया में संवेदनशीलता कैसे विकसित की जाए.

इससे पूर्व अपराध भट बनाम मध्य प्रदेश राज्य, 18 मार्च, 2021 मामले में शीर्ष न्यायालय ने राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी से कहा था कि वह युवा न्यायाधीशों के प्रशिक्षण और न्यायाधीशों की सतत शिक्षा में लैंगिक संवेदनशीलता से संबंधित आवश्यक सामग्री को शीघ्रता से तैयार करे, जिसमें न्यायिक तर्कों में अंतर्निहित रूढ़ियों और अचेतन पूर्वाग्रहों के प्रति पर्याप्त जागरूकता कार्यक्रम शामिल हों.

सारी दुनिया के शेयर मार्केट में गिरावट

भारत में शेयर बाजार सामान्य निवेशक की भावना को अभिव्यक्त करता है. इतने पर भी वह देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था के मूल्यांकन का एकमात्र साधन नहीं है. इस बात पर सभी को ध्यान देना होगा. देशवासियों को जीपीपी, महंगाई दर, औद्योगिक उत्पादन बेरोजगारी, व्यापार घाटा तथा विदेशी मुद्रा भंडार जैसे आधारभूत मुद्दों पर निरंतर नजर रखते हुए स्थिति का आकलन करना चाहिए. इन सारी कसौटियों पर भारत की अर्थव्यवस्था की बुनियाद मजबूत है. वैश्विक संस्यार व रेटिंग एजेंसी भी इसकी पुष्टि करती हैं. इस समय यदि विदेशी संस्थागत निवेशकों के पैसा निकालने और युद्ध के माहौल में बाजार गिरा है तो आगे चलकर उठेगा भी. इसलिए सामान्य निवेशक को घबराकर बिक्री करने से बचना होगा. ऐसा कदम उठाना जल्दबाजी होगी. ठीक इसी प्रकार गिरता बाजार देखकर अभी निवेश करना भी उचित नहीं है क्योंकि मार्केट में और गिरावट आ सकती है. मार्केट को अपने सही स्तर पर पहुंचाने देना होगा. संपूर्ण निवेशक ही कंपनी के शेयर में न करते हुए विविधिकरण करने से जोखिम कम हो जाती है. आर्थिक दृष्टि से



मजबूत कंपनी में ही दीर्घकालिक निवेश करना चाहिए. इसी तरह तेजी या मंदी की लहर में बहने की बजाय एसआईपी (सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के जरिए लंबी अवधि के लिए निवेश करने का विकल्प लाभदायक होता है. अपनी निवेश की क्षमता और मिलने वाले लाभ का उद्देश्य निश्चित कर कटिनाई के समय भी धैर्य रखना उचित होगा. शेयर मार्केट विविध कारणों से प्रभावित होता है. गत वर्ष के अंत में वह ऊंचाई पर जा रहा था लेकिन इस वर्ष वह गिरता जा रहा है. इजरायल व अमेरिका का ईरान के साथ युद्ध तथा होर्मुज खाड़ी में ईरान द्वारा जहाज रोकने से विश्व भर में तेल संकट उत्पन्न हो गया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्दी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12200					
1	2	3	4	5	6
7	8				9
10					
	11	12	13		
14	15			16	
17	18		19	20	
			21	22	
23					24

का दुधारा हथियार 24. अनुकृति, अनुकरण, कॉपी (उर्दू) ऊपर से नीचे
1. छोटी लड़की, कन्या, बेटा (सं.)
2. रुपये के लेन-देन का व्यवहार करने वाला, श्रेष्ठ पुरुष 4. रक्षा करने वाला, पहरेदार 5. किसी वस्तु के टूट-पूट भाग को ठीक करना, जीर्णोद्धार (उर्दू) 6. झुका हुआ, विनीत 8. तख्ता, आकाश 12. निगलना 13. झरोखा (सं.) 14. पैरों में लगाने का अलता, महावर (सं.) 16. पाजेब, नुपूर 18. नदी या समुद्र के किनारे की भूमि 20. भूत, वर्तमान और भविष्य 21. जंगल

Solution 12199

प	ह	न	जी	व	न
र	ह	र	त	ज	
चू	न	र	न	क	र
न	ख	क	वा	य	द
	शि	ला	या	स	लो
सु	ख	द	भ	व	न
ल	ना	भ	या	न	क
ह	त्या	प	ट	ना	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा, वाहन पशु आदि से लाभ होगा, आर्थिक क्षेत्र में कमी के कारण योजनाएं बाधित होंगी, प्रियंका को अधिकता रहेगी, प्रियंका के कारण कार्यों में हानि हो सकती है. मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का वाहन पशु आदि का लाभ प्राप्त होगा, भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को

आज जन्म शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान और मिलनसार होगा, स्वाभाव में क्रोध का भाव रहेगा, निर्णय लेने में सक्षम रहते हैं, ये किसी के अधिनस्थ काम करना पसंद नहीं करते, इनका भाग्यदय जन्म स्थान से दूर होता है.

उत्पत्तिकालीन ग्रह चाल

8		6		5
9	के7 सू	चू		
	10		4	
	11	1	3	
	12	2		

पंचांग

रा.मि. 26 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण त्रयोदशी भौमवासरे दिन 7/51, शतभिषा नक्षत्रे रातअंत 5/23, सिद्ध योगे प्रातः 7/14 तदुपरि साध्य योगे रातअंत 5/51, वणिज करणे सू.उ. 6/3, सू.अ. 5/57, चन्द्रवार कुम्भ, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, कपास, मोती, पुखराज, अलसी, उड़द, घी, तिल, गुड़, खांड, रूई, कपास, में तेजी होगी, वायदा विचार आज 1 बजकर 18 मिनट से 25 मिनट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठावें, भाग्यांक 3725 है.

मेघ- साझेदारी में कार्य शुरू कर सकते हैं

आपसी बातचीत से मामले सुलझेंगे, भौतिक सुख साधनों को पूर्ण होगा, संपर्क विवाद का समाधान होगा.

वृषभ- युवाओं को कैरियर में बेहतर सफलता मिलेगी, जल्दबाजी में गलती हो सकती है, धार्मिक यात्रा का योग है, अनावश्यक परिश्रम होगा.

मिथुन- अच्छे अवसर सामने आयेंगे, अनुशासन को कमी से कार्यस्थल की व्यवस्था विमर्श करनी है, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

कर्क- पुराना विवाद हल होगा, लोखों बातों से करीबी नाराज हो सकते हैं, यात्रा सुखद रहेगी, मानसिक प्रखरता रहेगी, लाभ होगा, पर कम.

सिंह- समय पर मदद न मिलने से निराशा होगी, भावुकता में लिये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, समय के अनुरूप कार्य करें, पुराना कार्य बनेगा.

कन्या- मित्रों से कहसुनी हो सकती है, सहकर्मियों नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं, श्रम प्रयास से अभीष्ट को प्राप्त होगा, नौकर चाकरों का सहयोग मिलेगा, तुला- पारिवारिक योजना में परिवर्तन होगा, आकस्मिक धनलाभ होगा, नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी, निजी कार्यों में खर्च होगा.

वृश्चिक- प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन की संभावना, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, आत्म विश्वास मनीबल बना रहेगा.

धनु- लेनदेन को लेकर आप पर आरोप-प्रत्यारोप लग सकते हैं, वाहन चलाने में सावधानी रखें, प्रियजनों से विवाद को टालें, व्यर्थ व्यय होगा.

मकर- व्यापार में नये लोग साथ आ सकते हैं, कार्यक्षेत्र में बदलाव लाभकारी रहेगा, पारिवारिक सुख मिलेगा, पुराना कार्य बनेगा, संतोष मिलेगा.

कुम्भ- लेनदेन का मामला सुलझने का आसार है, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च होगा, जोखिम के कार्यों में रुचि रहेगी, मनोकामना की पूर्ति होगी.

मीन- अनुभव को कमी से लाभ की योजना हाथ से निकल सकती है, अपने खर्च पर कटौती कर परिवार पर खर्च करेंगे, किये गये प्रयासों में लाभ होगा.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12200					
1	2	3	4	5	6
7	8				9
10					
	11	12	13		
14	15			16	
17	18		19	20	
			21	22	
23					24

का दुधारा हथियार 24. अनुकृति, अनुकरण, कॉपी (उर्दू) ऊपर से नीचे
1. छोटी लड़की, कन्या, बेटा (सं.)
2. रुपये के लेन-देन का व्यवहार करने वाला, श्रेष्ठ पुरुष 4. रक्षा करने वाला, पहरेदार 5. किसी वस्तु के टूट-पूट भाग को ठीक करना, जीर्णोद्धार (उर्दू) 6. झुका हुआ, विनीत 8. तख्ता, आकाश 12. निगलना 13. झरोखा (सं.) 14. पैरों में लगाने का अलता, महावर (सं.) 16. पाजेब, नुपूर 18. नदी या समुद्र के किनारे की भूमि 20. भूत, वर्तमान और भविष्य 21. जंगल

SUDOKU 7332

3	9		1					
5	4		6	8			1	3
		1	7		9	5		
8	9		5	3		4	7	
6	1	4	9		2	3		
3	4		1		8			
7	5		8	3		2	4	
		6				7	9	

रा.मि. 26 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण त्रयोदशी भौमवासरे दिन 7/51, शतभिषा नक्षत्रे रातअंत 5/23, सिद्ध योगे प्रातः 7/14 तदुपरि साध्य योगे रातअंत 5/51, वणिज करणे सू.उ. 6/3, सू.अ. 5/57, चन्द्रवार कुम्भ, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, कपास, मोती, पुखराज, अलसी, उड़द, घी, तिल, गुड़, खांड, रूई, कपास, में तेजी होगी, वायदा विचार आज 1 बजकर 18 मिनट से 25 मिनट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठावें, भाग्यांक 3725 है.

देहात में जहां जलाऊ लकड़ी, गोबर के कंडे, कपास या तुआर को फसल के डंडल आसानी से मिल जाते हैं, वहां अब भी चूल्हा जलाया जाता है. हाईवे में पड़ने वाले ढाबे में लकड़ियों से तंदूर जलाया जाता है. उसमें तंदूरी रोटी बनती है. बाबेक्यू करने के लिए सलाख में पनीर, शिमला मिर्च, टमाटर लगाकर कोयले की आंच पर सेका जाता है. चूल्हे के खाने का स्वाद ही अलग होता है. आप मटका रोटी खाकर देखिए तो पता चलेगा. गैस के संकट की वजह से लोग फिर केरोसिन के स्टोव, कोयले की सिगड़ी और लकड़ी के चूल्हे पर वापस लौटेंगे. प्रधानमंत्री मोदी ने गरीबों और ग्रामीणों के लिए उच्चला योजना शुरू की थी ताकि महिलाओं को चूल्हा फूंकने से उठने वाले धुएँ से राहत मिले लेकिन उन्हें क्या पता था कि ईरान युद्ध के कारण गैस की कमी से जूझना पड़ेगा.

पड़ोसी ने कहा, 'कभी चूल्हे का जिन्न फिल्मों गाने में भी होता था. महमूद का गाना आपको याद होगा- मेहबूबा मेहबूबा, बनालो मुझे चूल्हा, जला दो मेरा चूल्हा !'